'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 274: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

हिंदी कवियों का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

प्रा. डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड
(हिंदी विभाग)
महात्मा गांधी विद्यामंदिर,
कला,विज्ञान एव वाणिज्य महाविद्यालय,मनमाड तह. नांदगाँव जिला- नासिक
Email – vgrathod80@gmail.com

प्रत्येक कालखंड में हिंदी के साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से समकालीन परिस्थितियों का चित्रण बखूबी किया है, ठीक उसी प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन जब चल रहा था उस समय भी हिंदी के साहित्यकारों ने अपनी ओर से देश को आजादी दिलाने के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है। जब समाज दिशा भ्रष्ट हो जाता है, राजनीति पद भ्रष्ट हो जाती है और जनसाधारण अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं ,उसी समय साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से इन सभी का मार्गदर्शन करते हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भी इस बात के लिए अपवाद नहीं है। पराधीनता के उस कालखंड में जब सर्वत्र पराभव ही पराभव दिखाई देता था ऐसे समय में हमारे देश के अनेक क्रांतिकारियों ने और साहित्यकारों ने अपने देश की आजादी के आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया है। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से हमारे समाज को जागरूक किया है। समाज के मन में स्वाभिमान, मनोबल और आत्म बल बढ़ाने के लिए अपने साहित्य के माध्यम से बहुत बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है।

स्वतंत्रता आंदोलन के इस महायज्ञ में साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज में चेतना जगाने के जो प्रयास किए है वे प्रसंसनीय है। उसकी परिणति हमें आजादी जब फलीभूत हुई उसमें दिखाई देते हैं। समाज के हर वर्ग को इस आंदोलन में खड़ा करने का काम हमारे हिंदी साहित्यकारों ने किया है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार गोपालदास व्यास के शब्दों में,-

" आज़ादी के चरणों में जो जयमाला चढ़ाई जाएगी,
सुनो वह तुम्हारे शीशों के फूलों से गूंथी जाएगी।" 1

गोपालदास व्यास जी ने अपने उन महान क्रांतिकारियों को जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व निछावर किया उन सब के प्रति भावपूर्ण शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। मानव के समस्त रहस्य की ओर से ही उनकी स्मृतियों पर अपने पुष्प अर्पित किए हैं। सच यह है कि आज जब - जब भी हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस की धूम मची होती है तो हमें अपने अनेकों महान क्रांतिकारियों और बलिदान यों की स्मृतियां आगे रख देती है। हमारे चारों ओर उनकी स्मृतियाँ बड़े प्रश्न चिन्ह बनकर हमारे सामने आ खड़ी होती है और हमसे पूछती है कि आपने हमारे सपनों का भारत बनाने की दिशा में क्या किया ? कितना किया ? और कैसे किया ? जब स्वतंत्रता आंदोलन की हमारे देश में धूम मची थी तब लग-भग हर प्रांत के लग-भग हर भाषा भाषी क्षेत्र के महान साहित्यकारों, कवियों, लेखकों ने अपने -अपने ढंग से अपने - अपने क्षेत्र के लोगों को आजादी के आंदोलन में कूदने का आवाहन किया था। माइकल मधुसूदन ने बंगाली में, भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी में, नर्मदा ने गुजराती में, चिपलुनकर ने मराठी में, तथा अन्य अनेक साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। यह ऐसा साहित्य लेखन था जिसे